

# रामायण में हनुमान जी की भूमिका-

## दैवीय वायुगातिकीय तथा भक्ति, शक्ति और ब्रह्मणीय सेवा के प्रतीक

(पेपर संख्या:IRC8-226)

प्रोफ. भरत राज सिंह, महानिदेशक (तकनीकी),  
डा. प्रमोद कुमार सिंह, अधिष्ठाता व  
डा. आशा कुलश्रेष्ठ, विभागाध्यक्ष (सिविल)



स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज,  
वैदिक विज्ञान केंद्र, लखनऊ  
मोब.: 94150 25825; ईमेल: [brsinghiko@yahoo.com](mailto:brsinghiko@yahoo.com)



1. परिचय
2. हनुमान: चेतना की वैज्ञानिक गहराई
3. सूर्य निगलने की कथा (बाल्यावस्था)
4. उड़ान का विज्ञान: दिव्य एयरोडायनमिक्स
5. कूटनीति और ऊर्जा संतुलन (किषकिन्धा-काण्ड)
6. समुद्र पार करना (सुन्दर काण्ड)
7. लंका-दहन (सुन्दर काण्ड)

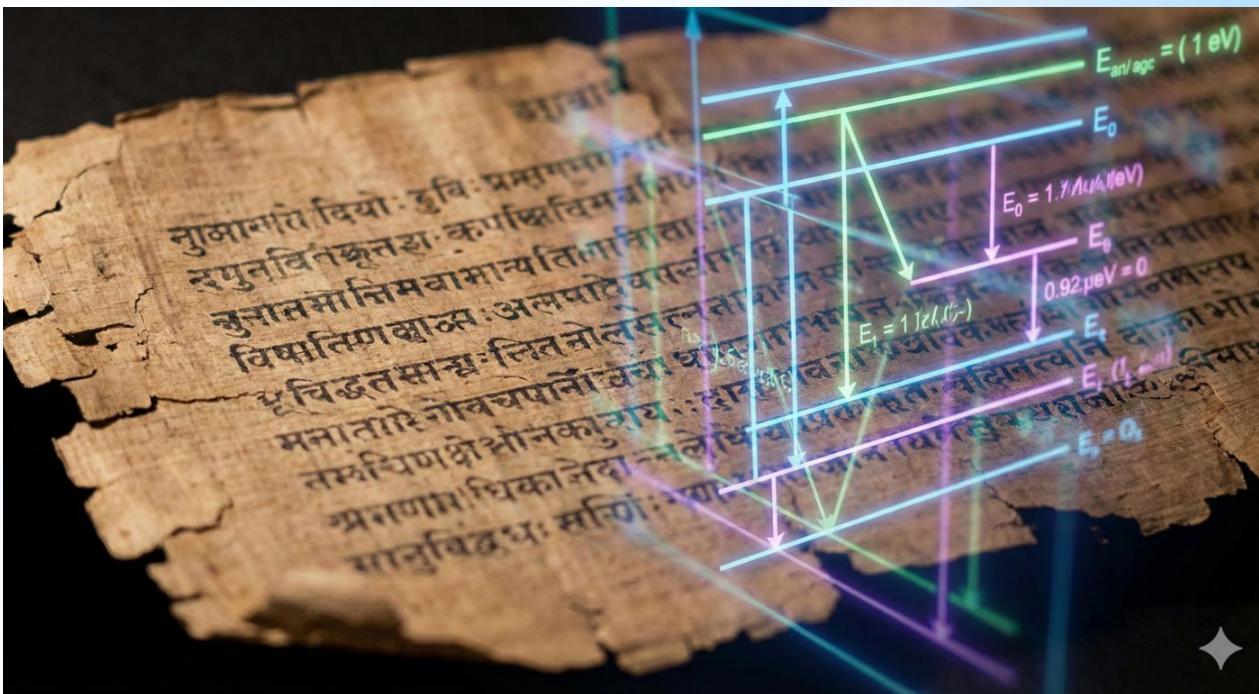
8. संजीवनी बूटी (लंका कांड)
9. कालनेमि वध (लंका काण्ड)
10. अहिरावण वध (उत्तर-काण्ड)
11. हनुमान चालीसा
12. हनुमान अष्टक
13. निष्कर्ष

# 1. परिचय (Introduction)

## रामायण: धर्म और विज्ञान का समन्वय

हम जानते हैं कि रामायण केवल एक धार्मिक महाकाव्य नहीं, बल्कि मानव चेतना, ऊर्जा विज्ञान और दैवीय वायुगतिकी का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करने वाला ग्रन्थ है।

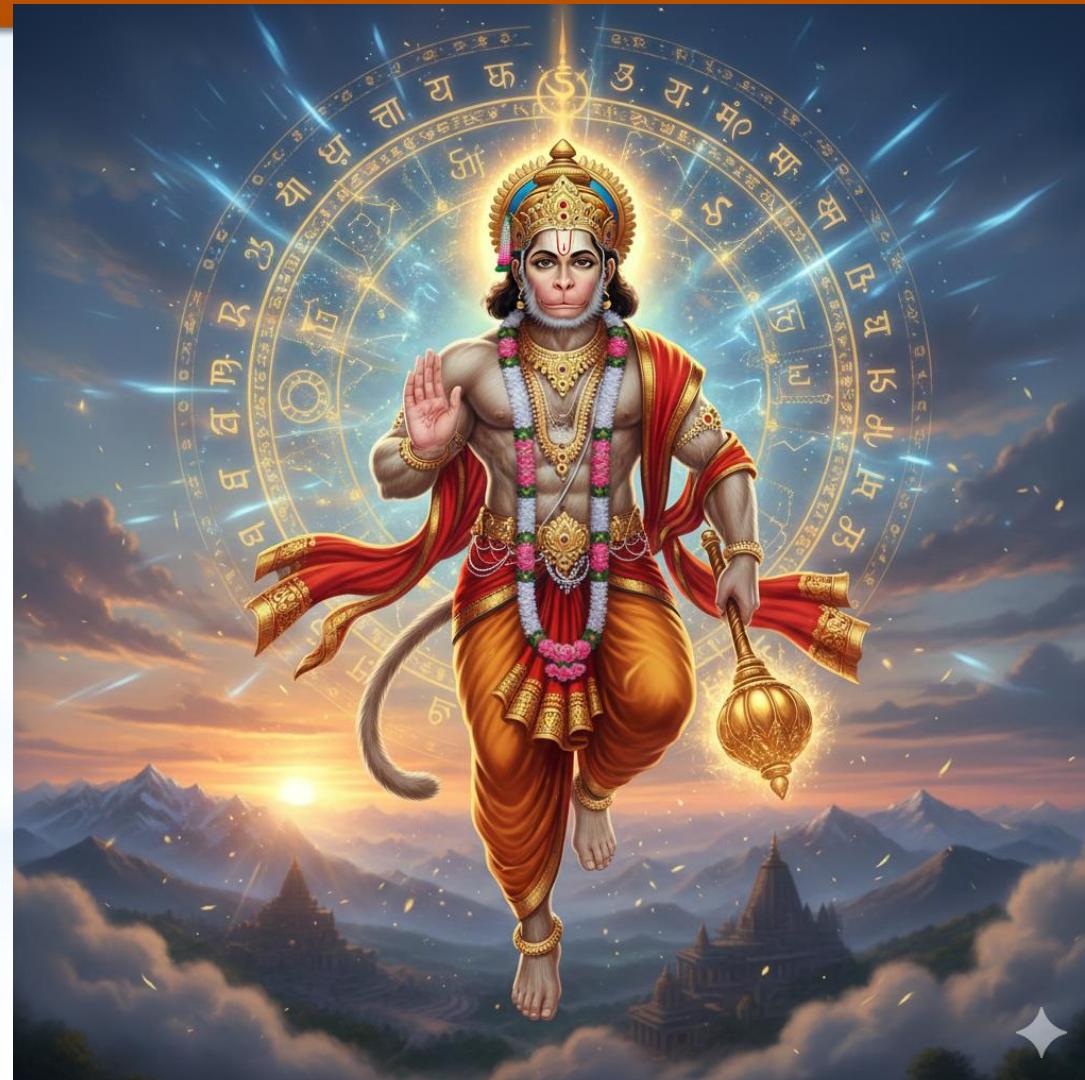
इस ग्रन्थ के सभी अध्यायों को पढ़ने से यह निष्कर्ष निकालता है कि प्राचीन भारतीय विचारधारा में भक्ति और विज्ञान एक-दूसरे के पूरक थे।



## 2. हनुमानः चेतना की वैज्ञानिक गहराई

**जब हम रामायण में हनुमान जी के पूर्ण चरित्र पर ध्यान देते हैं तो उनका चरित्र केवल एक धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि मानव चेतना की वैज्ञानिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक गहराईयों का अद्भुत उदाहरण है।**

**इससे मुख्य बिंदु उभर कर आता है कि :**  
उनकी शक्ति, गति और भक्ति इस एकीकृत दर्शन को जीवंत करती है।



# 3. सूर्य निगलने की कथा (बाल्यावस्था )

बाल्यावस्था में सूर्य को फल समझकर  
निगलने का प्रयासः

## हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्षी लियो तब, तीनहुं लोक भयो अंधियारों ।  
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो ।  
देवन आनि करी बिनती तब, छाडि दियो रवि कष्ट निवारो ।  
को नहि जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥१॥

**वैदिक विज्ञानः** यह वस्तुतः ऊर्जा अवशोषण (Solar Absorption) और ब्रह्मांडीय शक्ति नियंत्रण का द्योतक है।  
**निष्कर्षः** यह गुरुत्वाकर्षण बल की सीमाओं को लांघने की  
क्षमता को दर्शाता है।



# 4. उड़ान का विज्ञान: दिव्य एयरोडायनमिक्स



**अवधारणा:** हनुमान जी की उड़ान को "दिव्य एयरोडायनमिक्स" के रूप में देखा जा सकता है।

**योगिक शक्ति:** उनकी प्राणशक्ति शरीर को गुरुत्वाकर्षण से मुक्त करती है।

**स्रोत:** योगशास्त्र में वर्णित उदान वायु पर नियंत्रण ही उड़ान की योगिक शक्ति का स्रोत है।

# 5. कूटनीति और ऊर्जा संतुलन

(किष्किन्धा - काण्ड)



**किष्किन्धा के क्रष्णमूक पर्वत क्षेत्र में जब राम और लक्ष्मण पहुँचते हैं, तब सुग्रीव को भय होता है कि ये बाली के भेजे हुए योद्धा हो सकते हैं। सुग्रीव अपने सबसे बुद्धिमान मंत्री हनुमान को जाच हेतु भेजते हैं।**

हनुमान जी का दूसरा बड़ा रूप किष्किन्धा काण्ड में उभरा — जब वे राम-लक्ष्मण से प्रथम बार मिले।

जो-कूटनीति, संयम और मानसिक ऊर्जा संतुलन का उदाहरण है।

## निष्कर्ष

- ✓ केवल महाबली नहीं, महाबुद्धि है
- ✓ केवल सेवक नहीं, रणनीतिक सूत्रधार है
- ✓ केवल वानर नहीं, दैवी योजना का केंद्र है

# 6. समुद्र पार करना

(सुन्दर काण्ड)

वायुगतिकीय गति और दिशा-संवेदन (Navigation Sense) का उदाहरण।

बिना किसी मानचित्र या दृश्य संकेत के हनुमान जी मैनाक पर्वत से छलांग लगाकर समुद्र पार कर लंका पहुँचते हैं। यह उनका अद्भुत दिशा-ज्ञान है, जो सूर्य, वायु-प्रवाह, समुद्री तरंगों और आकाशीय संकेतों पर आधारित है।

लंका पहुँचकर वे नगर का सूक्ष्म निरीक्षण करते हैं, सही स्थान पर उतरते हैं और अशोक वाटिका तक पहुँचते हैं—यह सूक्ष्म-स्तरीय नेविगेशन का उत्कृष्ट उदाहरण है। वापसी में भी वे मार्ग-भ्रम से मुक्त रहते हैं, जो मानसिक स्थिरता और स्मृति-मानचित्र (Cognitive Map) की सिद्धि को दर्शाता है।

## निष्कर्ष

हनुमान की वायुगतिकीय गति और दिशा-संवेदन यह सिद्ध करता है कि रामायण में वर्णित शक्तियाँ केवल चमत्कार नहीं, बल्कि प्रकृति-नियमों के गहरे बोध पर आधारित हैं।



# 7.लंका-दहन

(सुन्दर काण्ड)

## 1.अणिमा सिद्धि: ऊर्जा का संकुचन (Energy Compression)

लंका में प्रवेश करते समय हनुमान जी अत्यंत सूक्ष्म रूप धारण करते हैं—

“स सन्धिष्ठोऽतिबलः कपि...” (भावार्थ)

अणिमा सिद्धि—जिसमें साधक अपने स्थूल शरीर की ऊर्जा को सूक्ष्म अवस्था में केंद्रित करता है।

## 2. गरिमा सिद्धि: ऊर्जा का विस्तार (Energy Expansion)

अशोक वाटिका विध्वंस, राक्षस-वध और लंका-दहन के समय हनुमान जी विशाल रूप धारण करते हैं।

यह गरिमा सिद्धि है—जहाँ संचित ऊर्जा का नियंत्रित विस्फोट (Controlled Expansion) होता है।

## 3. निष्कर्ष

- ✓ सच्ची शक्ति = ऊर्जा पर अधिकार
- ✓ सच्चा वीर = संयम + विवेक
- ✓ और सर्वोच्च सिद्धि = कर्तव्य के अनुसार ऊर्जा का उपयोग

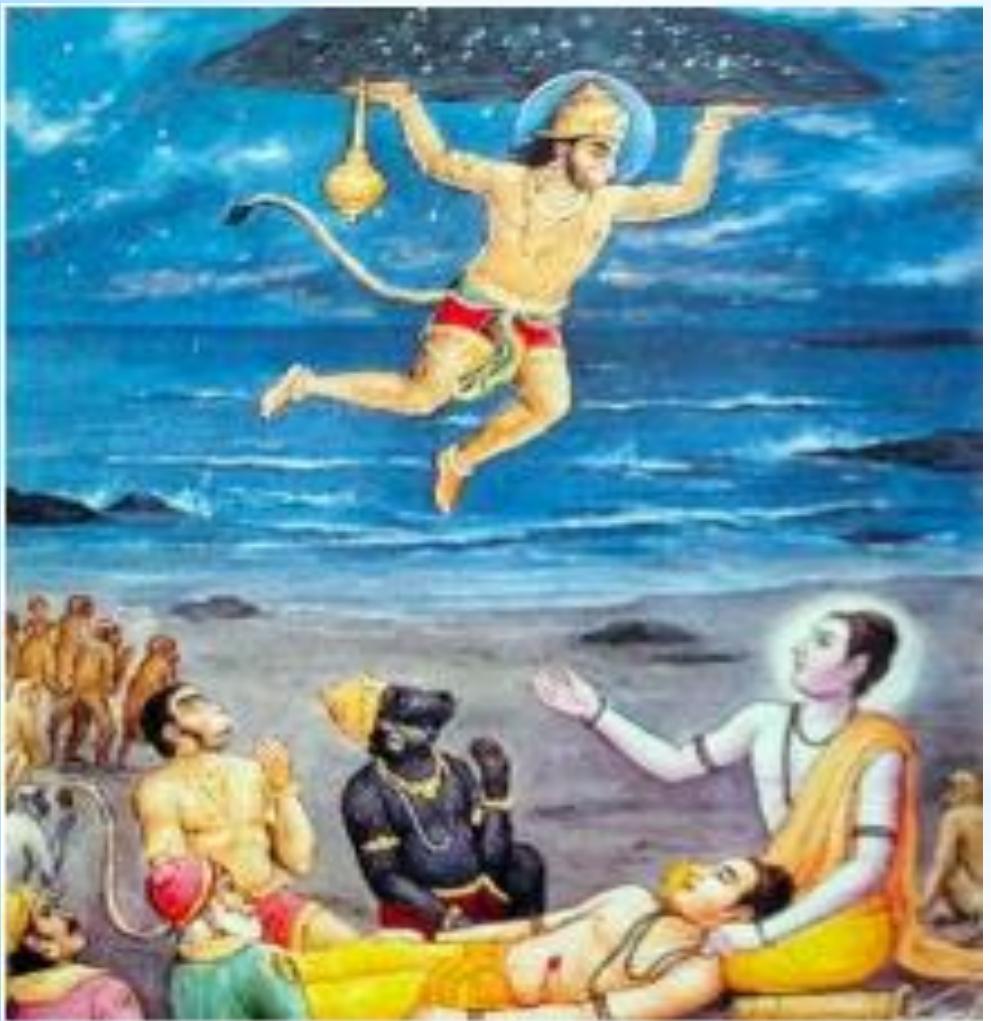
यही कारण है कि हनुमान जी वैदिक ऊर्जा-विज्ञान के जीवंत प्रतीक माने जाते हैं।

# 8. संजीवनी बूटी

(लंका कांड )

## औषधीय विज्ञान और चुंबकीय संतुलन का वैदिक उदाहरण।

जब लंका के रणभूमि में लक्ष्मण मूर्छित हो गए, तब वैद्य सुषेण ने हिमालय स्थित द्रोणगिरि पर्वत की संजीवनी बूटी लाने का निर्देश दिया। यह संकट लंका की भूमि पर उपस्थित युद्ध-परिस्थिति से जुड़ा था, जहाँ आने जाने में 5000 किलो मीटर दूरी तय करने हेतु - समय, दिशा और ऊर्जा-संतुलन का अत्यंत सूक्ष्म ज्ञान होना आवश्यक था।



# 9. कालनेमि वध (लंका काण्ड)

## उड़ान गति नियंत्रण और सुरक्षित लैंडिंग का प्रतीक:

### कालनेमि: मनोवैज्ञानिक और मायावी अवरोध

1. कालनेमि ने साधु का वेश धारण कर मार्ग में आश्रम रचा और जल-पान तथा विश्राम का प्रलोभन दिया। यह प्रसंग दर्शाता है कि लंका-पक्ष केवल शारीरिक युद्ध नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक युद्ध भी लड़ रहा था—जहाँ साधु-वेश में असत्य प्रस्तुत कर चेतना को भटकाने का प्रयास किया गया।

### 2. हनुमान जी का विवेक-बोध और विज्ञान-संवेग

हनुमान जी ने कालनेमि की वाणी, आचरण और वातावरण के सूक्ष्म संकेतों से असंगति पहचानी- परिणामस्वरूप हनुमान जी ने कालनेमि का वध कर मार्ग को निष्कंटक किया।

## भरत के सरकंडे के बाण से हनुमान जी का मूर्छित होना

### 1. सरकंडे का बाण: अहिंसा और मर्यादा का प्रतीक

भरत किसी साधारण युद्ध-बाण का प्रयोग नहीं करते, यह संकेत करता है कि भरत का उद्देश्य वध नहीं, बल्कि निरोध (restraint) था।

### 2. हनुमान जी का मूर्छित होना: ऊर्जा-संयम की लीला

हनुमान जी का मूर्छित होना शक्ति-हीनता नहीं, बल्कि स्वेच्छिक ऊर्जा-संयम का द्योतक है। यह प्रसंग वैदिक सिद्धांत “बल से बड़ा विवेक” को प्रतिष्ठित करता है।



# 10. अहिरावण वध (उत्तर-काण्ड )



## 1. अहिरावण-वध: दैवीय सेवा का अनिवार्य कर्म

अहिरावण, रावण का भ्राता, तामसिक शक्तियों द्वारा राम और लक्ष्मण को पाताल लोक ले जाकर यज्ञ-बलि देना चाहता है। वहाँ पर द्वारपाल हनुमान जी का औरुष पुत्र मकरध्वज थे, जिनसे हनुमान जी को बल युद्ध करना पड़ा।

## 2. पंचमुखी हनुमान: समन्वित ब्रह्माण्डीय शक्ति

अहिरावण-वध के लिए हनुमान जी को पंचमुखी स्वरूप धारण करते हैं—यह दर्शाता है कि जब संकट ब्रह्माण्डीय स्तर का हो, तब समाधान भी समन्वित दैवीय शक्तियों से होता है। पाँच दिशाओं के दीप एक साथ बुझाना काल, दिशा और ऊर्जा-नियंत्रण का प्रतीक है। बध के उपरान्त पाताल लोक का राजा नियुक्त करते हैं—यह धर्म, करुणा और उत्तरदायित्व का संतुलित निर्णय है।

## 3. पाताल लोक से श्रीराम-लक्ष्मण की सुरक्षित वापसी

हनुमान जी को दैवीय सेवा (Cosmic Duty) का साक्षात् प्रतीक सिद्ध करती है—जहाँ वीरता भक्ति में, और शक्ति सेवा में विलीन हो जाती है।

# 11. हनुमान चालीसा

**हनुमान चालीसा का शुरुआत श्लोक और उसके स्पंदन (Vibrational) लाभ**

हनुमान चालीसा की शुरुआत गोस्वामी तुलसीदास जी के इस अत्यंत शक्तिशाली श्लोक से होती है—

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि। बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥  
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन कुमार । बल बुधि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस विकार ॥2॥  
जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—चारों पुरुषार्थ प्रदान करने वाला है ॥

जय हनुमान ज्ञान गुरु सागर । जय कपीस तिह लोक उजागर ॥1॥ .....  
तुलसीदास सदा हौरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महं डेरा ॥40॥

पवन तनय संकट हरन मंगल मूरति रूप । राम लखन सीता सहित हृदय वसहु सुर भूप ॥3॥

आवृत्ति और स्पंदन ऊर्जा के वैज्ञानिक प्रभाव का संकेत।

# 12. हनुमान अष्टक

## अष्टक के पाठ से लाभ (आध्यात्मिक + मनोवैज्ञानिक)

**संकट-निवारण:** भय, बाधा और अनिश्चय में मानसिक दृढ़ता

**साहस व आत्मविश्वास:** निर्णय-क्षमता और मनोबल में वृद्धि

**स्पंदन-शांति:** लयबद्ध पाठ से श्वास-प्रश्वास संतुलन, तनाव में कमी

**भक्ति-संरेखण:** सेवा-भाव और सकारात्मक कर्म-प्रेरणा

**पाठ-विधि (संक्षेप):**

मंगलवार/शनिवार, शांत मन से 1 या 3 बार; प्रारंभ में “श्रीगुरु चरन...” का स्मरण करें।



### संकट मोचन हनुमानाष्टक

॥ मत्स्यपन्द्र छन्द ॥

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुं लोक भयो आंधियारो ।

ताहि सो त्रास भयो जग को, यह संकट काहुं सो जात न दारो ॥

देवन आनी करो विनती तब, छांडि दियो रवि कष्ट निवारो ।

को नहीं जानत है जग मैं कपि, संकट मोचन नाम निहारो ॥१॥

बाल की त्रास कपीम थमै गिरी, जात महापुर्भ पथ निहारो ।

## आधुनिक विज्ञान की भाषा में हनुमान जी—

- ✓ ऊर्जा-विज्ञान के प्रतीक
- ✓ मनोविज्ञान और न्यूरोसाइंस के आदर्श
- ✓ आपात प्रबंधन और लॉजिस्टिक्स के मॉडल और
- ✓ नैतिक-वैज्ञानिक नेतृत्व के मानक हैं।

इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि हनुमान जी आधुनिक विज्ञान के मानवीय और नैतिक आयाम हैं। अतः वैदिक विज्ञान और चेतना का यह अध्ययन आधुनिक युग व भविष्य में भी प्रेरक है / रहेगा।

# धन्यवाद !!!



Thank  
You

